रमज़ान में शबे क़द्र के अमाल

शब-ए-कद्र के अअमाल :- रमज़ान के महीने की उन्नीसवीं, इक्कीसवीं और तेईसवीं शब (रात), शब-ए-क़द्र है। मिलता है कि जो शब-ए-कद्र को दो रकअत नमाज़ अदा करे, हर रकअत में अल्हम्द के बाद सात बार कुलहोवल्लाह पढ़े और बाद नमाज़ के सत्तर बार "अस्तग़फेरूल्लाहा व अतूबो इलैह" (अर्थात् मै अल्लाह से मग़फरत की दुआ करता हूँ और तौबः करता हूँ उसकी बारगाह में) कहे अपनी जगह से न उठेगा कि खुदा उसको और उसके माँ-बाप को बख़्शेगा और कुछ मलाऐकः को भेजेगा कि उसके लिए नेकीयाँ लिखें अगले साल तक और मलाऐका को जन्नत में भेजेगा कि पेड़ और कमरे उसके लिए बनायें और नहरें जारी करें। तीनों शबों में गुस्ल सुन्नत है। बेहतर है कि सूरज डूबने के बाद नहाये और शाम की नमाज़ गुस्ल से पढ़े और मुस्तहब है कि कुर्आन मजीद हाथ में लेकर खोले और कहे :-

"अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलोका बेकेताबेकल मुन्ज़ाले वमा फीहे व फीहिस्मोकल अकबरो व अस्माओकल हुस्ना वमा योखाफो व युरजा अन तजअलानी मिन ओताक़ाऐका मेनन नारे व तक़ज़ेया हवाऐजी लिद दुनया वल आखिरः"

{अर्थात् खुदावन्दा मैं सवाल करता हूँ तुझसे वास्ते से तेरी उतारी हुई किताब के और वह जो उसमें है और उसमें तेरा सबसे बड़ा नाम और तेरे बेहतरीन सिफात हैं और वह चीज़ें हैं कि जिनसे ख़ौफ और उम्मीद पैदा हो कि तू करार दे मुझको अपने आज़ाद किये हुए लोगों में जहन्नम की आग से और पूरा कर मेरी हाजतों को दुनया और आखिरत की।}

फिर खुदा से दुआ माँगे उसके बाद कुर्आन मजीद बन्द करके सर पर रखे और यह कहे :-

"अल्लाहुम्मा बेहक़्क़े हाज़ल कुर्आने व बेहक़्क़े मन अरसल्ताहू बेही व बेहक़्क़े कुल्ले मोमेनिन मदहताहू फीहे व बेहक़्क़ेका अलैहिम फला अहादा अअराफो बेहक़्क़ेका मिनका"

www.IslamInHindi.org
अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रमज़ान में शबे क़द्र के अमाल

{अर्थात् खुदावन्दा इस कुर्आन शरीफ और उन मुक़ददस हस्तियो का वास्ता जिसे तूने यह कुर्आन देकर भेजा और हर उस मोमिन का वास्ता जिसकी तूने इसमें मदह (तारीफ) की है और तेरे उस हक़ का वास्ता जो उन पर है और हक़ तो यह है कि कोई शख़्स तुझसे ज़्यादः तेरे हक़ की मअराफ्त (जानकारी) नहीं रखता) फिर दस दस बार कहे :- ***बेका या अल्लाहो*** (अर्थात ए अल्लाह तुझे खुद तेरा वास्ता), ***बे मुहम्मदिन*** (अर्थात हज़रत मुहम्मद स॰ का वास्ता), ***बेअलीयिन*** (हज़रत अली अ॰ का वास्ता), ***बे फातेमातः*** (जनाबे फातेम़-ए-ज़ेहरा स॰ का वास्ता), ***बिल हसाने*** (इमाम हसन अ॰ का वास्ता), ***बिल हुसैने*** (इमाम हुसैन अ॰ का वास्ता), ***बे अली इब्निल हुसैने*** (इमाम ज़ैन-उल-आबिदीन अ॰ का वास्ता), ***बे मुहम्मद इब्ने अलीयिन*** (इमाम मुहम्मद बाक़िर अ॰ का वास्ता), ***बे जअफर इब्ने मुहम्मद*** (इमाम जअफर सादिक अ॰ का वास्ता), ***बे मूसब्ने जअफारिन*** (इमाम मूसा काज़िम अ॰ का वास्ता), ***बे अली इब्ने मूसा*** (इमाम अली रिज़ा अ॰ का वास्ता), ***बे मुहम्मद इब्ने अलीयिन*** (इमाम मुहम्मद तकी अ॰ का वास्ता), ***बे अली इब्ने मुहम्मद*** (इमाम अली नकी अ॰ का वास्ता), ***बिलहसानिब्ने अलीयिन*** (इमाम हसन अस्करी अ॰ का वास्ता), और ***बिल हुज्जातिल क़ाऐमे अलैहिस्सलाम*** (अर्थात इमाम मेहदी आखिर अ॰ का वास्ता)। फिर खुदा से जो दुआ हो मॉगे और इमाम हुसैन (अ॰) की तीनों शब ज़ियारत पढ़ना मुस्तहब है (जो ज़ियारत के अध्याय में लिखी जायेगी) और सौ रकअत नमाज़ तीनों शब पढ़ना सुन्नत है। ख़ासतौर से तेईसवीं शब को पढ़े कि बहुत फज़ीलत और ताकीद (ज़ोर दिया गया) है। ताक़त न हो बैठ कर पढ़े और जौशन-ए-कबीर और सगीर पढ़े और जहॉ तक हो सके रसूल (स॰) और औलाद-ए-रसूल (अ॰) पर सलवात (दुरूद) भेजे और बख़्शिश करे और अपने खुदा से दुनया और आखिरत की मुरादें मॉगे और मॉ-बाप, रिश्तेदार करीबी मिलने वालों और ज़िन्दः और मुर्दः अपने मोमिन भाईयों के लिए दुआ करे।

19वीं शब् का अमाल

उन्नीसवीं शब :- उन्नीसवीं शब के खास अअमाल यह हैं कि ऊपर लिखे हुवे अअमाल करने के बाद सौ बार ***"अस्तग़फ़ेरुल्लाहा रब्बी व अतूबो इलैह"*** (अर्थात् मैं अल्लाह से मग़फ़रत तलब करता हूँ जो मेरा रब है और उसकी बारगाह में तौबः करता हूँ) कहे और सौ बार ***"अल्लाहुम्मलअन क़तालाता अमीरिल मोमेनीन"*** (अर्थात् खुदावन्दा हज़रत अमीरिल मोमेनीन (अ॰) के क़ातिलों पर लअनत भेज) कहे और यह दुआ पढ़े :-

"अल्लाहुम्मज अल फ़ीमा तक़्ज़ी व तोक़द्दरो मेनल अमरिल महतूमे व फ़ीमा तफ़रोक़ो मेनल अमरिल हकीमे फ़ी लैलातिल क़द्रे मेनल क़ज़ाइल लज़ी ला यो रददो वला योबददालो अन तकतोबानी मिन हुज्जाजे बैतेकल हरामिल मब्रूरे हज्जोहोमुल मशकूरे सअ योहोमुल मग़फ़ूरे ज़ुनूबोहोमुल मुकफ़्फ़ारे अनहुम सय्येआतोहुम वज़अल फ़ीमा तक़्ज़ी व तोक़द्दरो अन तोतीला उमरी व तोवस्सेआ अलय्या फ़ी रिज़्क़ी व तोक़द्देराली फ़ी जमीअे ओमूरी मा हुवा ख़ैरुन ली फ़ी दुनयाया व आख़ेराती या अरहामर्राहिमीन"

{अर्थात् खुदावन्दा क़रार दे उस चीज़ में कि जो तू तय और मुकर्रर करता है लाज़मी अहकाम में से और उन चीज़ों में कि जिनका तू फ़ैसला करता है हकीमाना बातों में से शब-ए-कद्र में उस फैसले से कि जो रद नहीं हो सकता और बदलने के क़ाबिल नहीं है यह कि तू मुझे दर्ज कर दे हज करने वालों में से बैतुल हराम के जिनका हज क़ुबूल है और कोशिश एअतेराफ के क़ाबिल है और गुनाह बख़्शे गये हैं और ग़लतीयों का उनकी कफ़्फ़ारः है और क़रार दे उस चीज़ में जिस का तू फैसला करता है और मुकर्रर करता है कि मेरी उम्र लम्बी है और मेरी रोज़ी में बढ़ोतरी अता कर और क़रार दे मेरे लिए तमाम मोआमलात में मेरे लिए वह जो बेहतर हो मेरे लिए मेरी दुनिया और आखिरत में, ए रहम करने वालों में सबसे ज़्यादः रहीम}

फिर खुदा से अपनी दुआऐं माँगे।

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

रमज़ान में शबे क़द्र के अमाल

21वीं शब् का अमाल

इक्कीसवीं शब :- इक्कीसवीं शब को भी गुस्ल और अअमाल और ज़ियारत अदा करे जिस तरह से ऊपर वर्णन किया गया है और इस शब की फज़ीलत पहले वाली शब से ज़्याद: है और आखिरी दस दिनों की दुआओं में, जो दुआ इस शब की है (जिसका तर्णन आगे किया जायेगा), पढ़े।

23वीं शब् का अमाल

तेईसवीं शब :- तेईसवीं शब के अअमाल भी यही हैं। उसी तरह से अदा करे और रात भर जागे। कुर्आन की तिलावत करता रहे, दुआ करे, तौब: करे कि इस रात हर चीज़ मौत, बला, रोज़ी, कज़ा और जो कुछ भी इस साल होने वाला होता है, वह आने वाली शब-ए-कद्र तक के लिए तय होता है। अत: वह खुश नसीब है कि जो यह शब अिबादत में गुज़ारे।

इमाम जअफर सादिक़ (अ•) से मनकूल है कि जो सूर:-ए-अनकाबूत (पार: 20) सूर:-ए-रूम (पार: 21) इस शब पढ़े, तो वह बहिश्त (जन्नत) वालों में से होगा। इस शब सूर:-ए-हामीम (पार: 25) और हज़ार बार इन्नाअनज़ल्नाह पढ़ने को भी बताया गया है। इस शब इमाम हुसैन (अ•) की ज़ियारत पढ़ना और आख़िरी दस दिनों की दुआओं में से जो दुआ इस शब की है, (जिसका वर्णन आगे किया जायेगा) उसे पढ़ना भी बताया गया है।

यह भी फर्माया कि जो इस रात जागे और सौ रकअत नमाज़ पढ़े खुदा उसकी रोज़ी बढ़ायेगा और दुश्मनों से बचायेगा और डूबने से पनाह देगा और घर के नीचे दबने और लुकम: गले में फसने और जानवरों के फाड़ खाने से महफूज़ रखेगा, मुन्किर नकीर के हौल को दूर करेगा और जब कब्र से बाहर आयेगा, तो उसके साथ एक नूर होगा कि उसकी रौशनी महशर वालों में होगी और उसका नाम:-ए-अअमाल उसके दाहिने हाथ में देंगे और जहन्नम की आग, पुल-ए-सिरात से गुज़रने और अज़ाब से निजात देंगे और

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

बिना हिसाब जन्नत में दाखिल होगा और वहाँ दोस्त होगा पैग़म्बरों और सच्चों और शहीदों का। जो नमाज़ें सुन्नती हैं, अगर उनको बैठ कर भी पढ़े, तो भी जाएज़ है और इस शब दुआए-ए-जौशन-ए-कबीर व सग़ीर पढ़ने की बहुत फज़ीलत है इसके अलावा इस रात दुआ-ए-मकारिम-ए-इखलाक़ और दुआ-ए-तौबः भी ज़रूर पढ़े कि इनका सवाब बहुत है और इसे दुआओं की किताबों में देखा जा सकता है।

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990